اٰیاتها ۳۰ ﴿۶۷ سُوْرَةُ الْمُلْكِ مَكِّيَّةٌ ۷۷﴾ رکوعاتها ۲

सूरए मुल्क मक्किय्या है, इस में तीस आयतें और दो रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह़्म वाला[1]

تَبٰرَكَ الَّذِيْ بِيَدِهِ الْمُلْكُ ۫ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرُ ۙ﴿۱﴾ الَّذِيْ

बड़ी बरकत वाला है वोह जिस के क़ब्ज़े में सारा मुल्क[2] और वोह हर चीज़ पर क़ादिर है वोह जिस

خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيٰوةَ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ

ने मौत और ज़िन्दगी पैदा की कि तुम्हारी जांच हो[3] तुम में किस का काम ज़ियादा अच्छा है[4] और वोही इ़ज़्ज़त वाला

الْغَفُوْرُ ۙ﴿۲﴾ الَّذِيْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ؕ مَا تَرٰى فِيْ خَلْقِ الرَّحْمٰنِ

बख़्शिश वाला है जिस ने सात आस्मान बनाए एक के ऊपर दूसरा तो रह़्मान के बनाने में क्या फ़र्क़

مِنْ تَفٰوُتٍ ؕ فَارْجِعِ الْبَصَرَ ۙ هَلْ تَرٰى مِنْ فُطُوْرٍ ﴿۳﴾ ثُمَّ ارْجِعِ

देखता है[5] तो निगाह उठा कर देख[6] तुझे कोई रख़्ना (ख़राबी व ऐब) नज़र आता है फिर दोबारा

الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنْقَلِبْ اِلَيْكَ الْبَصَرُ خَاسِئًا وَّهُوَ حَسِيْرٌ ﴿۴﴾ وَلَقَدْ زَيَّنَّا

निगाह उठा[7] नज़र तेरी त़रफ़ नाकाम पलट आएगी थकी मांदी[8] और बेशक हम ने

السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيْحَ وَجَعَلْنٰهَا رُجُوْمًا لِّلشَّيٰطِيْنِ وَاَعْتَدْنَا لَهُمْ

नीचे के आस्मान को[9] चरागों से आरास्ता किया[10] और उन्हें शैत़ानों के लिये मार किया[11] और उन के लिये[12] भड़क्ती आग

1 : सूरतुल मुल्क मक्किय्या है इस में दो 2 रुकूअ़, तीस 30 आयतें, तीन सो तीस 330 कलिमे, एक हज़ार तीन सो तेरह 1313 ह़र्फ़ हैं। ह़दीस में है कि सूरए मुल्क शफ़ाअ़त करती है। (ترمذی وابوداود) एक और ह़दीस में है अस्ह़ाबे रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने एक जगह ख़ैमा नस्ब किया वहां एक क़ब्र थी और उन्हें ख़याल न था कि वोह साहि़बे क़ब्र सूरए मुल्क पढ़ते रहे यहां तक कि तमाम की तो ख़ैमे वाले सह़ाबी ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया : मैं ने एक क़ब्र पर ख़ैमा लगाया मुझे ख़याल न था कि यहां क़ब्र है और थी वहां क़ब्र और साहि़बे क़ब्र सूरए मुल्क पढ़ते थे यहां तक कि ख़त्म किया, सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि येह सूरत मानिआ़ मुन्जियह है अ़ज़ाबे क़ब्र से नजात दिलाती है। (الترمذی وقال غریب) 2 : जो चाहे करे जिसे चाहे इ़ज़्ज़त दे जिसे चाहे ज़िल्लत। 3 : दुन्या की ज़िन्दगी में। 4 : या'नी कौन ज़ियादा मुत़ीअ़ व मुख़्लिस है। 5 : या'नी आस्मानों की पैदाइश से क़ुदरते इलाही ज़ाहिर है कि उस ने कैसे मुस्तह़्कम, उस्तुवार, मुस्तक़ीम, मुस्तवी, मुतनासिब बनाए। 6 : आस्मान की त़रफ़ बारे दिगर (दूसरी मरतबा) 7 : और बार बार देख 8 : कि बार बार की जुस्त्जू से भी कोई ख़लल न पा सकेगी। 9 : जो ज़मीन की त़रफ़ सब से ज़ियादा क़रीब है। 10 : या'नी सितारों से 11 : कि जब शयात़ीन आस्मान की त़रफ़ उन की गुफ़्त्गू सुनने और बातें चुराने पहुंचें तो कवाकिब से शो'ले और चिंगारियां निकलें जिन से उन्हें मारा जाए। 12 : या'नी शयात़ीन के लिये।

www.dawateislami.net

عَذَابَ السَّعِيْرِ ۝٥ وَلِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ ؕ وَبِئْسَ

का अ़ज़ाब तय्यार फ़रमाया[13] और जिन्हों ने अपने रब के साथ कुफ़्र किया[14] उन के लिये जहन्नम का अ़ज़ाब है और क्या ही

الْمَصِيْرُ ۝٦ اِذَآ اُلْقُوْا فِيْهَا سَمِعُوْا لَهَا شَهِيْقًا وَّهِيَ تَفُوْرُ ۝٧ تَكَادُ

बुरा अन्जाम जब उस में डाले जाएंगे उस का रेंकना (चिंघाड़ना) सुनेंगे कि जोश मारती है मा'लूम होता है कि

تَمَيَّزُ مِنَ الْغَيْظِ ؕ كُلَّمَآ اُلْقِيَ فِيْهَا فَوْجٌ سَاَلَهُمْ خَزَنَتُهَآ اَلَمْ يَاْتِكُمْ

शिद्दते ग़ज़ब में फट जाएगी जब कभी कोई गुरौह उस में डाला जाएगा उस के दारोग़ा[15] उन से पूछेंगे क्या तुम्हारे पास कोई डर

نَذِيْرٌ ۝٨ قَالُوْا بَلٰى قَدْ جَآءَنَا نَذِيْرٌ ۙ فَكَذَّبْنَا وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ

सुनाने वाला न आया था[16] कहेंगे क्यूं नहीं बेशक हमारे पास डर सुनाने वाले तशरीफ़ लाए[17] फिर हम ने झुटलाया और कहा अल्लाह ने कुछ

مِنْ شَيْءٍ ۖ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ كَبِيْرٍ ۝٩ وَقَالُوْا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ اَوْ

नहीं उतारा तुम तो नहीं मगर बड़ी गुमराही में और कहेंगे अगर हम सुनते या

نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِيْٓ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ۝١٠ فَاعْتَرَفُوْا بِذَنْۢبِهِمْ ۚ فَسُحْقًا

समझते[18] तो दोज़ख़ वालों में न होते अब अपने गुनाह का इक़रार किया[19] तो फिटकार

لِّاَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ۝١١ اِنَّ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ لَهُمْ

हो दोज़ख़ियों को बेशक वोह जो बे देखे अपने रब से डरते हैं[20]

مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ۝١٢ وَاَسِرُّوْا قَوْلَكُمْ اَوِ اجْهَرُوْا بِهٖ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ

उन के लिये बख़्शिश और बड़ा सवाब है[21] और तुम अपनी बात आहिस्ता कहो या आवाज़ से वोह तो

بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝١٣ اَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ ؕ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ۝١٤ ع ١٤

दिलों की जानता है[22] क्या वोह न जाने जिस ने पैदा किया[23] और वोही है हर बारीकी जानता ख़बरदार

13 : आख़िरत में **14 :** ख़्वाह वोह इन्सानों में से हों या जिन्नों में से **15 :** मालिक और उन के आ'वान ब त़रीक़े तौबीख़ **16 :** या'नी अल्लाह का नबी जो तुम्हें अ़ज़ाबे इलाही का ख़ौफ़ दिलाता **17 :** और उन्हों ने अह़कामे इलाही पहुंचाए और ख़ुदा के ग़ज़ब और अ़ज़ाबे आख़िरत से डराया। **18 :** रसूलों की हिदायत और उस को मानते। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि तक्लीफ़ का मदार अदिल्लए सम्इ़या व अ़क़्लिया दोनों पर है और दोनों हुज्जतें मुल्ज़िमा हैं। **19 :** कि रसूलों की तक्ज़ीब करते थे और उस वक़्त का इक़रार कुछ नाफ़ेअ़ नहीं **20 :** और उस पर ईमान लाते हैं **21 :** उन की नेकियों की जज़ा। **22 :** उस पर कुछ मख़्फ़ी नहीं। **शाने नुज़ूल :** मुश्रिकीन आपस में कहते थे चुपके चुपके बात करो मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) का ख़ुदा सुन न पाए, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और उन्हें बताया गया कि उस से कोई चीज़ छुप नहीं सकती, येह कोशिश फ़ुज़ूल है **23 :** अपनी मख़्लूक़ के अह़वाल को।

www.dawateislami.net

هُوَ الَّذِیْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ ذَلُوْلًا فَامْشُوْا فِیْ مَنَاكِبِهَا وَ كُلُوْا مِنْ

वोही है जिस ने तुम्हारे लिये ज़मीन राम (ताबेअ़) कर दी तो उस के रस्तों में चलो और अल्लाह की रोज़ी में

رِّزْقِهٖ ؕ وَ اِلَیْهِ النُّشُوْرُ ﴿۱۵﴾ ءَاَمِنْتُمْ مَّنْ فِی السَّمَآءِ اَنْ یَّخْسِفَ بِكُمُ

से खाओ[24] और उसी की त़रफ़ उठना है[25] क्या तुम उस से निडर हो गए जिस की सल्त़नत आस्मान में है कि तुम्हें ज़मीन में

الْاَرْضَ فَاِذَا هِیَ تَمُوْرُ ﴿۱۶﴾ اَمْ اَمِنْتُمْ مَّنْ فِی السَّمَآءِ اَنْ یُّرْسِلَ

धंसा दे[26] जभी वोह कांपती रहे[27] या तुम निडर हो गए उस से जिस की सल्त़नत आस्मान में है कि

عَلَیْكُمْ حَاصِبًا ؕ فَسَتَعْلَمُوْنَ كَیْفَ نَذِیْرِ ﴿۱۷﴾ وَ لَقَدْ كَذَّبَ الَّذِیْنَ

तुम पर पथराव भेजे[28] तो अब जानोगे[29] कैसा था मेरा डराना और बेशक उन से अगलों ने

مِنْ قَبْلِهِمْ فَكَیْفَ كَانَ نَكِیْرِ ﴿۱۸﴾ اَوَ لَمْ یَرَوْا اِلَى الطَّیْرِ فَوْقَهُمْ صٰٓفّٰتٍ

झुटलाया[30] तो कैसा हुवा मेरा इन्कार[31] और क्या उन्हों ने अपने ऊपर परिन्दे न देखे पर फैलाते[32]

وَّ یَقْبِضْنَ ؔؕ مَا یُمْسِكُهُنَّ اِلَّا الرَّحْمٰنُ ؕ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَیْءٍۭ بَصِیْرٌ ﴿۱۹﴾

और समेटते उन्हें कोई नहीं रोकता[33] सिवा रह़मान के[34] बेशक वोह सब कुछ देखता है

وقف لازم اختلافی / وقفِ منزل / وقف غفران

اَمَّنْ هٰذَا الَّذِیْ هُوَ جُنْدٌ لَّكُمْ یَنْصُرُكُمْ مِّنْ دُوْنِ الرَّحْمٰنِ ؕ اِنِ

या वोह कौन सा तुम्हारा लश्कर है कि रह़मान के मुक़ाबिल तुम्हारी मदद करे[35] काफ़िर

الْكٰفِرُوْنَ اِلَّا فِیْ غُرُوْرٍ ﴿۲۰﴾ اَمَّنْ هٰذَا الَّذِیْ یَرْزُقُكُمْ اِنْ اَمْسَكَ

नहीं मगर धोके में[36] या कौन सा ऐसा है जो तुम्हें रोज़ी दे अगर वोह अपनी रोज़ी

رِزْقَهٗ ۚ بَلْ لَّجُّوْا فِیْ عُتُوٍّ وَّ نُفُوْرٍ ﴿۲۱﴾ اَفَمَنْ یَّمْشِیْ مُكِبًّا عَلٰى وَجْهِهٖۤ

रोक ले[37] बल्कि वोह सरकश और नफ़रत में ढीट बने हुए हैं[38] तो क्या वोह जो अपने मुंह के बल औंधा चले[39]

---

24 : जो उस ने तुम्हारे लिये पैदा फ़रमाई। **25 :** क़ब्रों से जज़ा के लिये। **26 :** जैसा क़ारून को धंसाया। **27 :** ताकि तुम उस के अस्फ़ल में पहुंचो (या'नी सब से नीचे पहुंचो)। **28 :** जैसा लूत़ عَلَیْہِ السَّلَام की क़ौम पर भेजा था **29 :** या'नी अ़ज़ाब देख कर **30 :** या'नी पहली उम्मतों ने **31 :** जब मैं ने उन्हें हलाक किया। **32 :** हवा में उड़ते वक़्त **33 :** पर फैलाने और समेटने की ह़ालत में गिरने से **34 :** या'नी बा वुजूदे कि परिन्दे बोझल, मोटे, जसीम होते हैं और शैए सक़ील त़ब्अ़न पस्ती की त़रफ़ माइल होती है वोह फ़ज़ा में नहीं रुक सकती, अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत है कि वोह ठहरे रहते हैं, ऐसे ही आस्मानों को जब तक वोह चाहे रुके हुए हैं और वोह न रोके तो गिर पड़ें। **35 :** अगर वोह तुम्हें अ़ज़ाब करना चाहे। **36 :** या'नी काफ़िर शैत़ान के इस फ़रेब में हैं कि उन पर अ़ज़ाब नाज़िल न होगा। **37 :** या'नी उस के सिवा कोई रोज़ी देने वाला नहीं। **38 :** कि ह़क़ से क़रीब नहीं होते, इस के बा'द अल्लाह तआ़ला ने काफ़िर व मोमिन के लिये एक मसल बयान फ़रमाई **39 :** न आगे देखे न पीछे न दाएं न बाएं।

www.dawateislami.net

اَهْدٰۤى اَمَّنْ یَّمْشِیْ سَوِیًّا عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِیْمٍ ﴿۲۲﴾ قُلْ هُوَ الَّذِیْ

ज़ियादा राह पर है या वोह जो सीधा चले[40] सीधी राह पर[41] तुम फ़रमाओ[42] वोही है जिस ने

اَنْشَاَكُمْ وَ جَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَ الْاَبْصَارَ وَ الْاَفْـِٕدَةَؕ قَلِیْلًا مَّا

तुम्हें पैदा किया और तुम्हारे लिये कान और आंख और दिल बनाए[43] कितना कम

تَشْكُرُوْنَ ﴿۲۳﴾ قُلْ هُوَ الَّذِیْ ذَرَاَكُمْ فِی الْاَرْضِ وَ اِلَیْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿۲۴﴾

हक़ मानते हो[44] तुम फ़रमाओ वोही है जिस ने ज़मीन में तुम्हें फैलाया और उसी की तरफ़ उठाए जाओगे[45]

وَ یَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿۲۵﴾ قُلْ اِنَّمَا الْعِلْمُ

और कहते हैं[46] येह वा'दा[47] कब आएगा अगर तुम सच्चे हो तुम फ़रमाओ येह इल्म

عِنْدَ اللّٰهِ ۫ وَ اِنَّمَاۤ اَنَا نَذِیْرٌ مُّبِیْنٌ ﴿۲۶﴾ فَلَمَّا رَاَوْهُ زُلْفَةً سِیْٓـَٔتْ

तो अल्लाह के पास है और मैं तो येही साफ़ डर सुनाने वाला[48] फिर जब उसे[49] पास देखेंगे

وُجُوْهُ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا وَ قِیْلَ هٰذَا الَّذِیْ كُنْتُمْ بِهٖ تَدَّعُوْنَ ﴿۲۷﴾ قُلْ

काफ़िरों के मुंह बिगड़ जाएंगे[50] और उन से फ़रमाया जाएगा[51] येह है जो तुम मांगते थे[52] तुम फ़रमाओ[53]

اَرَءَیْتُمْ اِنْ اَهْلَكَنِیَ اللّٰهُ وَ مَنْ مَّعِیَ اَوْ رَحِمَنَا ۙ فَمَنْ یُّجِیْرُ الْكٰفِرِیْنَ

भला देखो तो अगर अल्लाह मुझे और मेरे साथ वालों को[54] हलाक कर दे या हम पर रहम फ़रमाए[55] तो वोह कौन सा है जो काफ़िरों को

مِنْ عَذَابٍ اَلِیْمٍ ﴿۲۸﴾ قُلْ هُوَ الرَّحْمٰنُ اٰمَنَّا بِهٖ وَ عَلَیْهِ تَوَكَّلْنَا ۚ

दुख के अ़ज़ाब से बचा लेगा[56] तुम फ़रमाओ वोही रहमान है[57] हम उस पर ईमान लाए और उसी पर भरोसा किया

40 : रास्ते को देखता **41 :** जो मन्ज़िले मक़्सूद तक पहुंचाने वाली है। मक़्सूद इस मसल का येह है कि काफ़िर गुमराही के मैदान में इस तरह हैरान व सरगर्दां जाता है कि न उसे मन्ज़िल मा'लूम न राह पहचाने और मोमिन आंखें खोले राहे हक़ देखता पहचानता चलता है। **42 :** ऐ मुस्तफ़ा ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْكَ وَسَلَّم मुश्रिकीन से कि जिस ख़ुदा की तरफ़ मैं तुम्हें दा'वत देता हूं वोह **43 :** जो आलाते इल्म हैं लेकिन तुम ने इन क़ुवा (क़ुव्वतों) से फ़ाएदा न उठाया, जो सुना वोह न माना, जो देखा उस से इ़ब्रत हासिल न की, जो समझा उस में ग़ौर न किया **44 :** कि अल्लाह तआ़ला के अ़ता फ़रमाए हुए क़ुवा और आलाते इदराक से वोह काम नहीं लेते जिस के लिये वोह अ़ता हुए, येही सबब है कि शिर्क व कुफ़्र में मुब्तला होते हो। **45 :** रोज़े क़ियामत हिसाब व जज़ा के लिये **46 :** मुसल्मानों से तमस्ख़ुर व इस्तिह़्ज़ा के तौर पर **47 :** अ़ज़ाब या क़ियामत का **48 :** या'नी अ़ज़ाब व क़ियामत के आने का तुम्हें डर सुनाता हूं, इतने ही का मामूर हूं, इसी से मेरा फ़र्ज़ अदा हो जाता है, वक़्त का बताना मेरे ज़िम्मे नहीं। **49 :** या'नी अ़ज़ाबे मौऊ़द को **50 :** चेहरे सियाह पड़ जाएंगे वह़्शत व ग़म से सूरतें ख़राब हो जाएंगी **51 :** जहन्नम के फ़िरिश्ते कहेंगे **52 :** और अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام से कहते थे कि वोह अ़ज़ाब कहां है जल्दी लाओ, अब देख लो येह है वोह अ़ज़ाब जिस की तुम्हें तलब थी **53 :** ऐ मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ! कुफ़्फ़ारे मक्का से जो आप की मौत की आरज़ू रखते हैं **54 :** या'नी मेरे अस्ह़ाब को **55 :** और हमारी उ़म्रें दराज़ कर दे। **56 :** तुम्हें तो अपने कुफ़्र के सबब ज़रूर अ़ज़ाब में मुब्तला होना (है), हमारी मौत तुम्हें क्या फ़ाएदा देगी ? **57 :** जिस की तरफ़ हम तुम्हें दा'वत देते हैं।

www.dawateislami.net

فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ هُوَ فِیْ ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ ﴿٢٩﴾ قُلْ اَرَءَیْتُمْ اِنْ اَصْبَحَ

तो अब जान जाओगे[58] कौन खुली गुमराही में है तुम फ़रमाओ भला देखो तो अगर सुब्ह को

مَآؤُكُمْ غَوْرًا فَمَنْ یَّاْتِیْكُمْ بِمَآءٍ مَّعِیْنٍ ﴿٣٠﴾ ع ٢

तुम्हारा पानी ज़मीन में धंस जाए[59] तो वोह कौन है जो तुम्हें पानी ला दे निगाह के सामने बहता[60]

اٰیاتها ٥٢ | ٦٨ سُوْرَةُ الْقَلَمِ مَكِّیَّةٌ ٢ | رکوعاتها ٢

सूरए क़लम मक्किय्या है, इस में बावन आयतें और दो रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रहम वाला[1]

نٓ وَالْقَلَمِ وَمَا یَسْطُرُوْنَ ﴿١﴾ مَآ اَنْتَ بِنِعْمَةِ رَبِّكَ بِمَجْنُوْنٍ ﴿٢﴾ وَاِنَّ

क़लम[2] और उन के लिखे की क़सम[3] तुम अपने रब के फ़ज़्ल से मज्नून नहीं[4] और ज़रूर

لَكَ لَاَجْرًا غَیْرَ مَمْنُوْنٍ ﴿٣﴾ وَاِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِیْمٍ ﴿٤﴾ فَسَتُبْصِرُ وَ

तुम्हारे लिये बे इन्तिहा सवाब है[5] और बेशक तुम्हारी ख़ू बू बड़ी शान की है[6] तो अब कोई दम जाता है कि तुम भी देख

یُبْصِرُوْنَ ﴿٥﴾ بِاَیِّیْكُمُ الْمَفْتُوْنُ ﴿٦﴾ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ

लोगे और वोह भी देख लेंगे[7] कि तुम में कौन मज्नून था बेशक तुम्हारा रब ख़ूब जानता है जो उस की राह

سَبِیْلِهٖ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِیْنَ ﴿٧﴾ فَلَا تُطِعِ الْمُكَذِّبِیْنَ ﴿٨﴾ وَدُّوْا لَوْ

से बहके और वोह ख़ूब जानता है जो राह पर है तो झुटलाने वालों की बात न सुनना वोह तो इस आरज़ू में हैं कि

58 : या'नी वक़्ते अ़ज़ाब **59 :** और इतनी गहराई में पहुंच जाए कि डोल वग़ैरा से हाथ न आ सके **60 :** कि उस तक हर एक का हाथ पहुंच सके, येह सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला ही की क़ुदरत में है तो जो किसी चीज़ पर क़ुदरत न रखे उन्हें क्यूं इ़बादत में उस क़ादिरे बरहक़ का शरीक करते हो। **1 :** इस सूरत का नाम सूरए नून व सूरए क़लम है, येह सूरत मक्किय्या है, इस में दो 2 रुकूअ़, बावन 52 आयतें, तीन सो 300 कलिमे, एक हज़ार दो सो छप्पन 1256 हर्फ़ हैं। **2 :** अल्लाह तआ़ला ने क़लम की क़सम ज़िक्र फ़रमाई, उस क़लम से मुराद या तो लिखने वालों के क़लम हैं जिन से दीनी दुन्यवी मसालेह़ व फ़वाइद वाबस्ता हैं और या क़लमे आ'ला मुराद है जो नूरी क़लम है और उस का तूल फ़ासिलए ज़मीनो आस्मान के बराबर है। उस ने ब हुक्मे इलाही लौहे महफ़ूज़ पर क़ियामत तक होने वाले तमाम उमूर लिख दिये। **3 :** या'नी आ'माल। बनी आदम के निगहबान फ़िरिश्तों के लिखे की क़सम **4 :** उस का लुत्फ़ो करम तुम्हारे शामिले हाल है, उस ने तुम पर इन्आ़म व एह़सान फ़रमाए, नुबुव्वत और हिक्मत अ़ता की, फ़साहते ताम्मा, अ़क़्ले कामिल, पाकीज़ा ख़साइल, पसन्दीदा अख़्लाक़ अ़ता किये, मख़्लूक़ के लिये जिस क़दर कमालात इम्कान में हैं सब अ़ला वज्हिल कमाल अ़ता फ़रमाए, हर ऐ़ब से ज़ाते आ़ली सिफ़ात को पाक रखा, इस में कुफ़्फ़ार के उस मक़ूले का रद है जो उन्हों ने कहा था "یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْ نُزِّلَ عَلَیْهِ الذِّكْرُ اِنَّكَ لَمَجْنُوْنٌ"। **5 :** तब्लीग़े रिसालत व इज़्हारे नुबुव्वत और ख़ल्क़ को अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ दा'वत देने और कुफ़्फ़ार की उन बेहूदा बातों और इफ़्तिराओं और ता'नों पर सब्र करने का। **6 :** ह़ज़रत उम्मुल मुअमिनीन आइशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से दरयाफ़्त किया गया तो आप ने फ़रमाया कि सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم का ख़ुल्क़ क़ुरआन है। ह़दीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने मुझे मकारिमे अख़्लाक़ व महासिने अफ़्आ़ल की तक्मील व तत्मीम के लिये मब्ऊ़स फ़रमाया। **7 :** या'नी अहले मक्का भी जब

www.dawateislami.net